"वेदों में विज्ञान"

जूतम

"वेदों में मनुष्य के लिए असीमित ज्ञान दिया गया है। किन्तु हमारे अभाग्यवश महाभारत के उपरान्त कोई भी विद्वान इस ज्ञान को न समझकर इसके अर्थों को याचना करके वेदों को पूजने और उच्चारण मात्र तक ही सीमित करके भारतीय ज्ञान से भारतीयों को वंचित करके रख दिया है। वेदों के एक-एक शब्द और अक्षर में विज्ञान का असीमित ज्ञान है। यहाँ जूतम नामक शब्द का वेदों से संकलन लेकर विद्वानों का ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं।

"सामवेद मंत्र सं. ५४१ में अया पवा पवस्वैना में कुत्स ऋषि ने सौम देवता के त्रिष्टूप छन्द में जूति नामक पदार्थ को गतिशील बताकर सम्पदाओं को देनेवाला बतलाया हैं। सामवेद ११०४ से ६ वाले त्रिक में इसका और अधिक विस्तार करके इसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म भूलोक तथा पृथ्वीलोक में इसके गुण कर्म के विस्तार करके सिद्धान्त दिये है। इनका ऋग्वेद ९/९१/५१/५५ वाले वर्ग में और अधिक विस्तार के साथ विवेचना की गयी है।"

"जूतम नामक पदार्थ विशेष के सिद्धान्तों पर कक्षीवान ऋषि ने अश्विनो देवता के मंत्री में त्रिष्टूप-छन्द द्वारा ऋग्वेद १/११६/१ से ५ वाले वर्ग में प्रकाश डाला है। यहाँ पर इस पदार्थ को युद्ध विज्ञान में भी कार्य देने वाले सिद्धान्त दिये हैं।"

"परुच्छेप ऋषि ने इसके रक्षा आदि सिद्धान्त ऋग्वेद १/१२१/१ से ५ वाले वर्ग में अग्नि देवता के अष्टि छन्द द्वारा दर्शाये हैं। यह प्रकरण सामवेद ४६५, १८/३, अथर्ववेद २०/६७/३, यजुर्वेद १५/४१ वाले अनुवाक द्वारा इस विद्या के अन्य चरणों को जोड़ता है।

"विश्वामित्र ऋषि ने अग्नि देवता के जगती छन्द द्वारा ऋग्वेद ३/३/६ से ११ वाले वर्ग में वैश्वानर अग्नि द्वारा तरह तरह के कार्यों में प्रयुक्त होने वाले सिद्धान्त दिये हैं। ऋग्वेद ३/१२/१ से ६ वाले वर्ग में इन्द्राग्नि देवता के गायत्री छन्द द्वारा विद्युत वायु के साथ जोड़कर इसके अनेक गुणधर्म क्रिया सिद्धान्त दिये हैं।"

वामदेव ऋषि ने भी ऋग्वेद ४/११/११ से १५ वाले वर्ग में इन्द्र देवता के त्रिष्टूप और पंक्ति छन्द द्वारा जूतम पदार्थ सिद्धान्त दिये हैं। ऋग्वेद ४/३८/९ वाले वर्ग में भी दधि का नामक देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा युद्ध विज्ञान और नक्षत्र विज्ञान में कार्य आने वाले सिद्धान्त दिये हैं।

नामाक काण्व ऋषि ने ऋग्वेद ८/४१/६ वाले वर्ग में वरुणदेवता के जगती छन्द द्वारा वरुण विज्ञान के साथ जूतम पदार्थ के समन्वय करने वाले सिद्धान्त दिये हैं।

काश्यप ऋषि ने पवमान सोम देवता के मंत्र में गायत्री छन्द द्वारा ऋग्वेद ९/६४/२६ वाले वर्ग में जूतम पदार्थ गुण कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है।

वृषगणों वामिष्ठ ऋषि ने ऋ. ९/९१/९ वाले वर्ग पवमान सोम देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा भी इस पदार्थ विशेष के सिद्धान्त दिये हैं।

यजुर्वेद २/१० से १४ वाले अनुवाक में परमेष्टी प्रजापति ऋषि ने विद्युत अंतरिक्ष, सविता, बृहस्पति और विज्ञान के सूतजूत पदार्थ ज्ञान को समन्वय करने के सिद्धान्त दिये हैं। यहाँ जूतम वाले मंत्र के छन्द जगती हैं।

यजुर्वेद १३/३८ से ४६ वाले अनुवाक में भी विरुप ऋषि ने जूत पदार्थ को अग्नि विज्ञान के साथ जोड़कर अंतरिक्ष में उसके उत्पन्न होने वाले सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

यजुर्वेद २१/२९ से ४० वाले अनुवाक में स्वस्त्यात्रेय ऋषि अश्वादयों देवता के मंत्रो द्वारा होता अग्नि के साथ जूत पदार्थ को समन्वय करके इसके गुण कर्म क्रिया सिद्धान्त दिये हैं। यजुर्वेद २१/४८ से ६१ वाले अनुवाक में भी जूत पदार्थ के सिद्धान्तों का वर्णन है।

अथर्ववेद १२/१/५८ वाले प्रसंग में अथर्वा ऋषि ने भूमि देवता के त्रिष्टूप छन्द में जूतिमान पदार्थों के ज्ञान का वर्णन सिद्धान्त रूप में दिया है।

अथर्ववेद १३/२/२५ वाले प्रसंग में ब्रह्मार्वा ऋषि ने अध्यात्म रोहिता आदित्य देवत्यम देवता के अनुप छन्द द्वारा सूर्य विज्ञान के साथ जूति पदार्थ के गुणों का वर्णन है। अथर्ववेद १९/५८/१ से ६ वाले प्रसंग में भी यम, वहके देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा जूत पदार्थों को प्रकाश ज्ञान के सिद्धान्त दिये हैं।

अथर्ववेद २०/११/२ वाले सूक्त में विश्वामित्र ऋषि ने इन्द्र देवता के त्रिष्टूप छन्द द्वारा आकाश और पृथ्वी के अस्त्र-शस्त्रों में विद्युत विज्ञान के साथ प्रयुक्त होने वाले सिद्धान्त दिये हैं। यह प्रसंग ऋग्वेद ३/३४/१ वाले सूक्त यजुर्वेद ३३/२६ वाले अनुवाक तै. ब्रा. २/४/३/३ द्वारा भी संदर्भित है। इस प्रकार यह प्रतीत होता है कि वेदों में विद्याओं का असीम भंडार है। तथा वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार. अध्ययन, अनुसंधान करके विज्ञान के उच्चतम शिखर पर पहुँचने में सफलता प्राप्त कर समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। इसी से आर्य समाज का नियम वेद समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक हैं प्रमाणित होता है। तथा इसी से महर्षि सरस्वती दयानन्द की विचारशीलता का पता लगता है कि उन्होंने कितना समझ कर आर्य समाज के नियम बनाये हैं।

संकलन कर्ता-विचारक,
छैल बिहारीलाल गोयल,
बारह द्वारी,
पसरट्टा बाजार, हाथरस

लेखक-बसन्तकुमार गर्ग